

बच्चे मन के सच्चे

बच्चे मन के सच्चे सारी जग के आँख के तारे,
ये वो नन्हे फूल हैं जो भगवान को लगते प्यारे,

खुद रुठे, खुद मन जाये, फिर हमजोली बन जाये,
झगड़ा जिसके साथ करें, अगले ही पल फिर बात करें.
इनकी किसी से बैर नहीं, इनके लिये कोई गैर नहीं,
इनका भोलापन मिलता है,
सबको बाँह पसारे बच्चे मन के सच्चे ...

इन्सान जब तक बच्चा है, तब तक समझ का सच्चा है,
यु यु उसकी उमर बढ़े, मन पर झूठ क मैल चढ़े,
क्रोध बढ़े, नफरत घेरे, लालच की आदत घेरे,
बचपन इन पापों से हटकर अपनी उमर गुजारे,
बच्चे मन के सच्चे ...

तन कोमल मन सुन्दर हैं बच्चे बड़ों से बेहतर है.
इनमें छूत और छात नहीं, झूठी जात और पात नहीं,
भाषा की तकरार नहीं, मजहब की दीवार नहीं,
इनकी नज़रों में एक हैं, मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारे
बच्चे मन के सच्चे ...

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/8933/title/bache-man-ke-sache-sari-jag-ke-ankh-ke-taare>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |